दूं जिनको रचता कहा जाता है। किसकी रचता? नई दुनियाँ का रचता। नई दुनियाँ को कहा जाता है स्वर्ग। वो सुखधाम। भल सुखधाम नाम कहते रहते है परन्तु समझते नही है। कृष्ण के मन्दिर को भी सुख धाम कहते है। अब वो तो हो गया छोटा मन्दिर। कृष्ण तो विश्व का मालिक था। बेहद के मालिक को जैसे कि हद का मालिक बना देते है। कृष्ण के छोटे से मन्दिर को सुखधाम कह देते है। बुधी मे नही आता है कि वो तो विश्व का मालिक था। भारत ही मे रहने वाला था। कितना फर्क है। तुमको भी पहले कुछ पता नही था। बाप को तो सब कुछ पता है। वो सृष्टी की आदि-मध्य-अन्त को जानते है। अब तो तुम बच्चे भी जानते हो। दुनियां मे यह भी कोई को पता नही है कि ब्र, वि, शं कोन है। शिव तो है ऊंच ते ऊंच भगवान। अच्छा फिर प्रजापिता ब्रहमा कहां से आया? है तो मनुष्य ही नां। प्रजापिता ब्रहमा तो जरूर यही चाहिये नां। जिसस ब्राहमण पैदा हो। प्रजापिता माना ही मुख से ऐडाप्ट करने वाला। तुम हो मुखवंशावली। अब तुम जानते हो कि कैसे ब्रहमा को बाप ने अपना बना कर मुखवंशावली बनाई। इनमे प्रवेश कीकिया फिर कहा कि यह हमारा बच्चा भी है। तुमको मालूम पड़ा कि ब्रहमा कहां से नाम पड़ा। कैसे पैदा हुआ कुछ भी नही जानते है। सिर्फ महिमा ही गाते है कि परमपिता परमात्मा ऊंच ते ऊंच है। परन्तु यह कोई की बुधी मे नही आता है कि ऊंच ते ऊंच बाप है। वो हम सब आत्माओं का पिता है। वो भी बिन्दु रूप ही है। उनकी बुधी मे सृष्टी की आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। अब तुमको भी नालेज मिली है। आगे यह ज्ञान जरा भी नही था। मनुष्य सिर्फ कहते रहते है कि ब्र, वि, श परन्तु जानते नही है तो यह उन्ही को तो समझना है नां। नही जानते है तो उनको ही तो बेसमझ कहा जाता है नां। अब तुम समझदार बने हो। जानते हो कि बाप ज्ञान का सागर है। हमको भी ज्ञान सुनाते है। पढाते है। सारी दुनियां समझती है कि कृष्ण पढ़ाते है। क्या पढाते है? गीता। समझते है गीता से राजयोग सिखाया राजयोग के लिये तो फिर विनाश भी जरूर चाहिये। क्योंकि राजयोग है ही सतयुग के लिये। जरूर पुरानी दुनियां का विनाश चाहिये। उसके लिये यह महाभारत लड़ाई है। आधा कल्प से लेकर तुम भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते आये हो। अब तो बाप से सुनते हो। बाप कोई शास्त्र नही बैठ कर सुनाते। वो सब है भक्ति मार्ग के। भक्ति जो करते है वो भी शास्त्रो मे मूंझ है। जो भक्ति मे है उनको ज्ञान का पता नही हो सकता। वो सब ठहरी भक्ति। जप तप करना शास्त्र आद पढ़ना सब भक्ति है। सभी भक्तो को भक्ति का फल चाहिये। क्योंकि मेहनत ही करते है भगवान से मिलने के लिये। परन्तु भक्ति से कोई को भगवान मिल न ही सकता। हां जब खुद भगवान आकर अपना परिचय देवे तब भक्ति को छोड कर ज्ञान लेवें। ज्ञान से सदगति भक्ति से दुरगति। वो दोनो इकठे तो चल नही सकते। अभी तो है ही भक्ति का राज्य। सभी भक्ति है। हर एक के मुख से ओ गाड फादर जरूरनिकलेगा। अब तुम बच्चे जानते हो कि बाप ने अपना परिचय दिया है कि मै भी छोटी बिन्दी हूँ। मुझे ही ज्ञान सागर कहते है। मुझ बिन्दी ही मे सारा ज्ञान भरा हुआ है। कोई भी विद्वान आर्चाय आद की बुधी मे यह नही है। आत्मा मे ही नालेज रहती है। अभी तुम बच्चे समझते हो कि उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। वो है सुप्रीम सोल। सुप्रीम अर्थात सबसे ऊंच ते ऊंच। पतित पावन बाप ही सुप्रीम है नां। मनुष्य है भगवान कहेंगे तो शिव लिंग ही याद पड़ेगा। वो भी यर्थाथ रीती से नही। ऐक जैसे कि आदत पड गई है कि भगवान को याद करना है। भगवान ही सुख दुःख देता है। ऐसा कह देते है। अभी तुम ऐसे नही कहेंगे। अब तुम जानते हो कि सतयुग मे सुखधाम था। दुःख का तो नाम नहीथा। कलियुग मे है ही दुःखधाम। सुख का नाम भी नही है। ऊंच ते ऊंच भगवान। वो तो सब आत्माओं का बाप है। शरीर के बाप को तो सभी जानते ही है। परन्तु यह किसीको भी पता नहीहै कि आत्माओं का बाबा भी है। कहते भी है कि हम सब ब्रदर्स है। तो जरूर है कि सब एक बाप के बच्चे ठहरे नां। बीच मे कोई कह देते है कि वो तो सर्व-

व्यापी है। तेर मे है मेर मे है। अेर तुम आत्मा हो यह तो तुम्हारा शारीर है। फिर तीसरी चीज हो सकती है। आत्मा को परमात्मा थोडेई कहेंगें। जीवात्मा कहा जाता है। जीव परमात्मा नही कहा जाता है। फिर परमात्मा सर्वव्यापी भला कैस हो सकता है? वो सर्वव्यापी होता तो फिर फादर हुडहो जावे। फादर को फादर ही से वर्सा काहे का मिलेगा? वाप से तो वच्चा ही वर्सा लेता है। सभी ही फादर तो फिर वावा किनको कहें। इतनी छोटी सी बात भी कोई की समझमे नही आती है। तव वाप कहते है कि कितने वेसमझ वन गये है। हम तुमको आज से 5000 वर्ष पहले कितना समझदार वना कर गये थे। हैल्दी वैल्दी समझदार। इससे जास्ती समझदार कोई हो नही सकता। अव तुमको जो समझ मिलती है वो वहां नही होगी। वहां यह थोडेई मालूम रहता है कि हम फिर गिरेंगें। यह पता हो तो फिर सुरव की भासना ही नही आवे। यह ज्ञान फिर प्रायः लेाप हो जाता है। यह सिर्फ अभी तुम्हारी बुधी मे है। ब्राहम्ण ही अधिकारी रहते है। तुम्हारी बुधी मे है कि अभी हम ब्राहम्ण वर्ण के हैं। ब्राहम्ण ही निमत बनते है। ज्ञान ब्राहम्णों को ही सुनाते है। ब्राहम्ण हीफिर सवको सुनाते है। गायन भी है कि भगवान ने आकर स्वर्ग की स्थापना की थी। राजयोगसिरवाया था। उंच ते उंच वाप ने क्या आकर सिवराया वो तुम जानते हो। और सभी के लिये तो जानते है। कृष्ण जयन्ति भी वनाते है। समझते है कि वो तो वैकुण्ठ का मालिक था। वो विश्व भर का मालिक था वो बुधीमे नही आता है। जव उनका राज्य था तो और कोई धर्म नही था। उनका ही सारे विश्व पर राज्य था और गगां के किनारे था। अब तुमको यह कौन समझा रहे हैं? भगवानोवाच। वाकी वो सब तो भक्ति मांग के ही शास्त्र आद सुनाते है। यहां तो खुद भगवान सुना रहे है। अभी तुम समझते हो कि हम पुरशोतम बन रहे है। सारी दुनियां घोरअन्धैर मे है। गाया भी जाता है कि ज्ञान सूंस प्रगटया अज्ञान अन्धेरा विनाश। तुम अर्थ को जानते हो। वो लोग तो जेा वोलते है सेा ही अनर्थ। उल्टा ही समझाते रहते है। ओम का अर्थ कितना लम्वा कर दिया है। ओम अर्थात अहम आत्मा। मम शरीर। आत्मा परमधाम की रहने वाली है। वो दूर देश से आते है नां। इसको निराकारी दुनियां कहा जाता है। तुमको ही यह बुधी मे है कि हम शान्ति धाम के रहने वाले है। फिर हम आकर 21जन्मों की प्रारब्ध पायेंगें। तुमको तो कितनी रवुशी होनी चाहिये। थ्यथ्या अन्दर मे होनी चाहिये। वेहद का वाप शिव वावा हमकों पढा रहे हैं। वो ह ज्ञान का सागर है। सृष्टी की आदि मध्य अन्त को जानते है। वाप को याद करते हैं तो जरी वाप आये थे। जयन्ति भी मनाते है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। तो कितनी रवुशी रहनी चाहिये कि हमको भगवान् पढ़ते है। कहते है बावा हमने आपको अपना वारस भी वनाया है। बच्चा बनाया है। वाप बच्चो पर वारी जाते है। बच्चे फिर कहते है कि भगवान आप जब आवेंगें तब हम आप पर वारी जावेंगें अर्थात वच्चा बन जावेंगें। यह भी अपना बच्चो को हो वारस वनाते है। बावा कैस वारस वनावेंगें यह भी गुहय वात है नां। अपना सब कुछ ऐक्सचेंज करना इसमे बुधी का काम है। गरीव तो झट ऐक्सचेंज कर देंगें। शाहुकार मुशकल ही करेंगें। जव तक कि पुरी रीती ज्ञान नही उठावें। इतनी हिम्मत नही रहती है। गरीवतो झट कह देते है कि बाबा हम तो आपको ही वारस बनावेंगें। हम पास रवा ही क्या है। वारस बना कर फिर शरीर निंवाह भी अपना करना है। युक्तियांवहुत वताते है। वाप तो सिर्फ देरवते है कि कोई पापकर्म मे तो पैस रवराव नही करते है। मनुष्य को पुण्यात्मा वनाने मे पैस लगाते है। सर्विस भी कायदे सिर करते है? यह पुरी जांच करेंगें। कितना निकाल सकते है वो सब राय देंगें। धन्धे मे ईश्वर अर्थ निकालते थे नां। वो तो था इन डोयरेक्ट। अभी तो वाप डोयरेक्ट आये है। मनुष्य समझते है कि हम जेा कुछ करते है उनका फल दुसरे जन्म मे ईश्वर देते हैं। कोई गरीव दुःरवी है तो समझेंगें इस जन्म का कर्म ही ऐसा किया हुआ है। अच्छे कर्म किये है तो सुरवी है। अभी कर्मो की गति वाप वैठ समझाते है। रावण राज्य मे तुम्हारे कर्म सभी विकर्म हो जाते है। अच्छे कर्मो का करके अल्प-

कान्ट के लिए सुरव मिलता है। ऐस नही कि सारी लाईफ भर ही कोई हेय लेल्थ रहती है।नही कोई नां कोई रोग रिवटपिट जरुर होगी। क्योकि अल्प काल का सुरव है। अभी वाप कहते है कि मै डायरेक्ट आया हूं।अभी यह रावण राज्य ही रवलास होना है। रावण राज्य ही अलग है। राम राज्य अलग है। राम राज्य को अव शिव बाबा स्थापन कर रहे है। वाकी शास्त्रो मे जो यह बाते लिरव दी है कि राम की सीता चुराई गई। यह हुआ। ऐसी कोई बात है नही।वहां तो दुःरव का नाम नही होता। कहते भी है राम राजा... तो सीता भी तो राम के साथ ही आ गई नां। वहां पर फिर अधम की बात हो ही कैस सकती है। रामायण ही कितनी लम्बी चौडी वाहयात बातो से भर दी है। सभी वाहयात बाते है।ऐसे किताब पढ़ने से कोई भगवान मिल सकता है क्या। कितनी बाते बनाई है। यह फिर भी बनेगी।वाप कहते है व्यास को कैसे कहां से अक्ल आया जो इतनी लम्बी कहानी बैठ बनाई है। कमाल की बात है रामायण बनाना, अव तुम समझते हो कि वो सब है भक्ति मार्ग। ज्ञान तो बिलकुल ही अलग है। भक्ति अलग है। तुम जानते हो कि हम फिर भी भक्ति को पास करेंगे। फिर वाप आकर ज्ञान देंगे। फिर भी भारत हेवन बनेगा।भारत कितना शाहुकार था। अब क्या बन गया है। तुम जानते हो कि यह चक्र कैसे फिरता है। भारत ही फिर गरीब हो पड़ता है। (भारत ही आज से 5000वर्ष पहले स्वर्ग था। इन(ल-न)का राज्य था। पहले बदी इनकी चली। कृष्ण प्रिन्स था फिर शादी की तो राजा बना। नारायण नाम पडा। यह भी तुम तोअभी समझते हो तो तुम्हे वण्डर लगता है।) बाबा आप रचता और रचना की नालेज सुनाते हो। आप हमको पढाते हो। बलिहार जावे। हमको तो सिवाय एक बाप के और कोई को भी याद नही करना है।अन्त तक पढ़ना है तो जरुर टीचर को याद करना है। स्कूल मे टीचर को याद करते है नां। उन स्कूलो मे तो कितने टीचर्स होते है। हर एक दर्जे का टीचर अलग। यहां तो एक ही टीचर है।कितना लवली बाप लवलीटीचर है। आगे भक्ति मार्ग मे अन्यर्थना से याद करते थे। अभी तो डायरेक्ट बाप पढाते है तो कितनी रवुशी होनी चाहिये। फिर भी कहते है बाबा भूल जाते है। पता नही ~~हमारा बुधी आपको याद क्यो नही करती है। माते भी~~ है कि ईश्वर की गत मत न्यारी है। बाबा आपकी मत गत और सदगति की तो बिलकुल ही न्यारि है वण्डरफुल है। ऐसे-2 वाप को याद करना चाहिये। स्त्री अपने पति के गुण गाती है नां।बरा अच्छा बडा मीठा। यह-2 उनकी प्रापर्टी है। अन्दर-2 मे रवुश होती रहती है। यह तो पतियों का भी पति है। बापों का वाप है। इनसे कितना हमको सुरव मिलता है। और सबसे तो दुःरव ही मिलता है। हां टीचर ही से सुरव मिलता है क्योकि पढाई से इनकम होती है।बाकी गुरु से क्या मिलता है। अभी तुम्हारी बुधी मे है कि इन गुरुओं को तो छूना भी नही चाहिये। यह तो दुरगति मे ले जाते है।आजकल तो गुरु की इतनी सेवा करते है जो कि पति की भी नही करते होगें। पावं धोकर पीते है। जबकि कहते है कि पति ही परमेश्वर है तो साधुओं के पास जाकर क्या करते है। अभी इस भक्ति मार्ग से अपने को और दुसरे को बचाना है। (गुरु हमेशा किया जाता है वानप्रस्थ अवस्था मे। बाप भी कहते है कि मै वानप्रस्थ मे आया हूं।) यह भी वानप्रस्थी तो मै भी वानप्रस्थी। यह सब मेरे बच्चे है। वाप टीचर गुरु तीनो ही इकठे है। बाप टीचर भी बनते है तो गुरु बन कर साथ भी ले जाते है। उस एक बाप की ही महिमा है। यह बाते कोई शास्त्रो आदमे नही है। सृष्टी की आदि मध्य अन्त का राज कोई समझा नही सकते। रचता को ही नही जानते है। अब रचता अपनी और रचना की पहचान दे रहे है। बाबा हर बात अच्छी रीती समझाते रहते है। इससे ऊंची नालेज कोई होती नहीं है। नां जानने की दरकार ही रहती है। हम सब कुछ जान कर विश्व का मालिक बन जाते है। और ज्यास्ति क्या बनेंगे? बच्चो की बुधी मे यह हो तब रवुशी मे रहे और बाप की याद में रहे। पुण्यात्मा बनने लिये याद मे जरुर रहना है।इसमे ही माया विघ्न डालती है। भूल जाते है। माया के तूफान बहुत आते है। यह भी ड्रामा मे नूंध है। ओम